



ध्येय IAS®

most trusted since 2003

Updated 2019

इतिहास

(सामान्य अध्ययन)

भारतीय संस्कृति एवं विरासत

(प्रदर्शनकारी कलाएँ)

द्वारा

विजय वेद सर

FACE TO FACE CENTRES

MUKHERJEE NAGAR (Head Office) :	A-12/13 ANSAL BUILDING, DR. MUKHERJEE NAGAR, DELHI - 110009, 9205274741/ 42/ 43/ 44
RAJENDRA NAGAR :	25B, SECOND FLOOR, PUSA ROAD NEW DELHI - 9205274743, 9205274745
LAKSHMI NAGAR :	1/53, 3RD FLOOR, LALITA PARK, LAXMI NAGAR, DELHI-92, 011-43012556, (+91)- 9311969232
RESIDENTIAL ACADEMY :	28/1A, KNOWLEDGE PARK III, GREATER NOIDA, UTTAR PRADESH - 201306, PHONE: 092053 36037/38/39
PRAYAGRAJ :	IIND & IIIRD FLOOR, SHRI RAM TOWER, 17C, SARDAR PATEL MARG, CIVIL LINES, ALLAHABAD PH.: 0532-2260189, 08853467068
LUCKNOW- ALIGANJ CENTRE :	A-12, SECTOR-J, ALIGANJ, LUCKNOW PH.: 0522-4025825, 09506256789
LUCKNOW- GOMTI NAGAR CENTRE:	CP-1, JEEWAN SHOPING COMPLEX, VIRAM KHAND-5, NEAR HUSARIYA CHAURAHA, GOMTI NAGAR, LUCKNOW -227106 PHONE: +91 7234000501, 7234000502
BHUBANESWAR :	OEU TOWER, THIRD FLOOR, KIIT ROAD, PATIA, BHUBANESWAR, ODISHA 751024, PH.: +91 9818244644, 7656949029

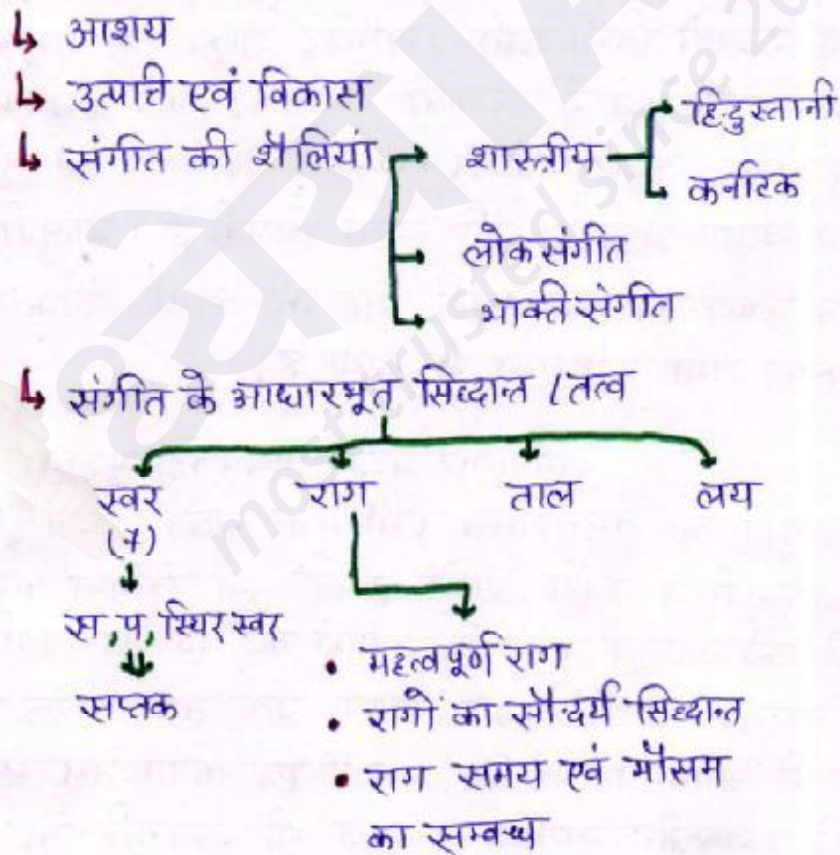
LIVE STREAMING CENTRES

Ahmedabad	9879113469/8000162499	Jodhpur	9529989199/9928965998
Aligarh	9837877879	Jalandhar	9888777887
Azamgarh	7617077051	Kanpur	7275613962
Bahraich	7275758422	Kurukshetra	8950728524
Bareilly	9917500098	Lucknow Alambagh	7518373333
Chandhigarh	8146199399/9050888338	Ludhiana	9876218943/9888178344
Faridabad	9711394350	Moradabad	9927622221
Gorakhpur	7080847474	Patiala	9041030070
Gwalior	9893481642	Patna	9334100961
Haldwani	8077728957/7060172525	Rewa	9926207755
Hisar	9996887708	Varanasi	7408098888
Jabalpur	8982082023		

:- प्रदर्शनकारी कलाएँ :-
performing Arts

(संगीत, नृत्य, नाटक, कठपुतली)

भारतीय संगीत (Indian Music)



संगीत प्रदर्शनकारी कला का एक रूप है, जो गायन वादन तथा नृत्य तीनों के मेल से बनता है। यह स्वरो रागों ताल एवं लय शुद्ध उच्चारण हाव भाव तथा विभिन्न माननीय मुद्राओं का एक प्रस्तुतीकरण है।

उत्पत्ति एवं विकास

भारतीय संगीत की जड़े काफी प्राचीन हैं। ऋग्वेदसम्भूता तथा वैदिक संस्कृति में इसके साक्ष्य मिलते हैं। भारतीयों द्वारा अति प्राचीन काल में ही संगीत को समर्पित करते हुए अनेक रचनाएँ लिखी गयीं। सामवेद इसका एक प्रमुख उदाहरण है। वेदों में उद्गात्री (गायक), नटी (नृतक) तथा विभिन्न वाद्य यंत्रों [(musical instrument) दुर्गाभी मृदंग वीणा आदि)] की चर्चा मिलती है। वासुरी वादक कृष्ण एवं उमरु धारी शिव की चर्चा वैदिक ग्रंथ रामायण तथा महाभारत में आया है।

संगीत पर प्रथम नियमबद्ध पुस्तक भरतमुनि का नाट्यशास्त्र (मौर्योत्तर काल) है। इस पुस्तक में भरतमुनि ने स्वरो रागों तालों एवं विभिन्न वाद्य यंत्रों की प्रस्तुत करने के तरीकों की विस्तृत चर्चा की है। नाट्यशास्त्र में गायन, वादन, नृत्य तथा नाटक के बारे में अनेक नियम दिए गए हैं एवं मानक तय किए गए हैं। शास्त्रीय संगीत में आज भी भरतमुनि के नाट्यशास्त्र के नियमों का पालन किया जाता है।

भरतमुनि के बाद मतंगमुनि - बृहद्देशी
जयदेव - गीतगोविन्द
सारंगदेव - संगीत रत्नाकर

मध्यकाल में अनेक मुस्लिम शासकों तथा सूफी संतों ने संगीत के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। उत्तर भारत में पहले से चली आ रही परम्परा (मंदिरों में एवं आचार्यों के अधीन विकसित) में मुस्लिम संतों एवं शासकों ने काफी योगदान दिया। अतः हिंदू-मुस्लिम परम्परा के मेल से हिंदुस्तानी शैली का विकास हुआ। वर्तमान में भी देश के विभिन्न संगीत धारणों में हिंदू-मुस्लिम आचार्यों तथा शिष्यों के द्वारा संगीत की शास्त्रीय परम्परा निरंतर प्रवाहमान है।

संगीत के आधारभूत तत्व / सिद्धान्त

1. स्वर (Notes) : (सा, रे, ग, म, पा, ध, नि)

स्वर कर्णप्रिय ध्वनि होते हैं। भारतीय संगीत में सात स्वर माने गए हैं जिन्हें विभिन्न पशु-पक्षियों से उत्पन्न माना गया है। सभी सातों स्वर विशेष देवी-देवताओं को समर्पित किये गये हैं जैसे -

स्वर	संस्कृत नाम	देवी-देवता	ध्वनि
सा	षड्ज	अग्नि	मौर
रे	रिषभ	ब्रह्मा	गाय. बैल
गा	गांधार	सरस्वती	बकरा
म	मध्यम	विष्णु	सारस
प	पंचम	लक्ष्मी	कौयल
ध	धैवत	गणेश	घोड़ा
नि	निषाद	सूर्य	हाथी

Note-: सातों स्वरों में से सा और पा हमेशा स्थिर होते हैं। प्रस्तुतीकरण के दौरान इनमें उतार-चढ़ाव नहीं होता है। अतः इन्हें शुद्ध स्वर कहा जाता है। बाकी पाँचों में उतार-चढ़ाव होने के कारण यह विषुद्ध स्वर कहे जाते हैं।

सप्तक-: सातों स्वरों को सप्तक भी कहा जाता है। विभिन्न वाद्ययंत्रों पर सप्तकों की तीन प्रकार से प्रस्तुत किया जाता है। जैसे-

मंद	मध्यम	तार
इसमें सुर काफी नीचे होता है। गायन का प्रारम्भ प्रायः मंद से होता है। मुख्यतः भजन मंद शैली में ही गाया जाता है।	इसमें सुर मंद की अपेक्षा थोड़ा तीव्र होता है। उदा- गज़ल	इसमें सुर काफी तीव्र होता है। उदा- कव्वाली

2. राग- राग स्वरों के निश्चित क्रम में प्रस्तुतीकरण को कहते हैं। राग संगीत के सौन्दर्य होते हैं। रागों की रचना सातों स्वरों के निश्चित आरोहण (बढ़ते क्रम) तथा अवरोहण (घटते क्रम) के आधार पर किया जाता है।

भारतीय संगीत में राग के लिए कम-से-कम 6 स्वर आवश्यक माने गए हैं। अतः रागों की तीन जातियाँ / प्रकार माने गए हैं। जैसे-

(i) **औडव राग-** यह पाँच स्वरों के मेल से बनता है।

उदा० राग भौपाली एवं राग मालकौंस

(ii) षड्ज राग - इसमें 6 स्वर होते हैं।
उदा० राग भारवा

(iii) सम्पूर्ण राग - यह सभी 7 स्वरों के मेल से बनता है।
उदा० राग भैरव, राग यमन
राग विलावल

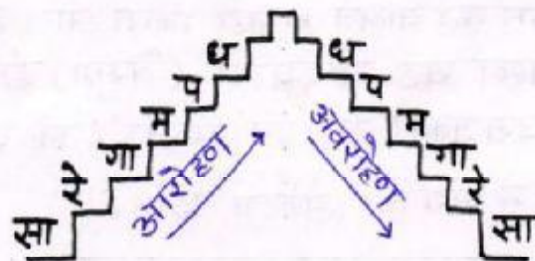
3. ताल :- ताल की उत्पत्ति संस्कृत के तल धातु से हुयी है। ताल समयावधि की भाषा होते हैं। तालों की सुव्यवस्थित ढंग से निश्चित क्रम का पालन करते हुए व्यवस्थित किया जाता है। एवं समयांतराल की ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत किया जाता है। तालों के कुल 32 प्रकार माने गए हैं।

4. लय :- स्वरो, रागों तथा तालों के सही समायोजन से लय बनता है। यह लय ही है जो संगीत को मधुर तथा सुरीला बनाता है।

रागों से सम्बन्धित महत्वपूर्ण बातें

राग का सौन्दर्य सिद्धान्त

Q. संगीत का सौन्दर्य सिद्धान्त वास्तव में राग का सौन्दर्य सिद्धान्त है?
OR
संगीत के वास्तविक सौन्दर्य राग होते हैं चर्चा कीजिए।



राग एक संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ 'रंग भरना' होता है इसका प्रयोग एक भुहावरे के रूप में किया जाता है। जिसका अर्थ है रंग भरना या सबकुछ भुलाकर मग्न हो जाना। संगीत में राग उसे कहते हैं जो मन को रंग से भर दे, प्रसन्न कर दे।

राग स्वरों के निश्चित क्रम होते हैं। जिसकी रचना संगीतकारों द्वारा आरोहण तथा अवरोहण के नियमों के आधार पर की जाती है। आरोहण में स्वरों की भावृत्ति बढ़ती जाती है जैसे 'सा' से ऊँची ध्वनि 'रे' की रे से ऊँची ध्वनि 'गा' की गा से ऊँची ध्वनि 'म' की तथा इसी क्रम में सबसे अधिक ध्वनि 'नि' की होती है। इसी प्रकार अवरोहण के तहत स्वरों का क्रम ऊँची ध्वनि से नीची ध्वनि (घटती भावृत्ति) में उतरता जाता है। जैसे नि, ध, प, म, ग, रे, सा।

जिस प्रकार हम एक के बाद सीढ़ियाँ चढ़ते हुए किसी मकान की मंजिल पर पहुँचते हैं तथा पुनः उसी सीढ़ियों से उतरकर नीचे आते हैं उसी प्रकार संगीतकार आरोहण तथा अवरोहण के नियमों का पालन करते हुए रागों की रचना करते हैं।

यदि रागों के उनके निश्चित क्रम में प्रस्तुत किए जाए तो संगीत सौंदर्य एवं आनंद से परिपूर्ण हो जाता है लेकिन क्रम का पालन नहीं किया जाय तो नियम विहीन होने के कारण यह सौंदर्यहीन (बेसुग) हो जाता है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि संगीतका सौंदर्य वास्तव में राग का सौंदर्य होता है।

महत्वपूर्ण राग एवं उनके गायन का समय

भारतीय संगीत में रागों को विशेष ऋतु-मौसम एवं समय के साथ सम्बन्धित करके प्रस्तुत किये जाने की परम्परा रही है। माना गया है कि किसी विशेष समय में विशेष राग गाने से विशेष भावना एवं रस उत्पन्न होता है। जिससे संगीत के वास्तविक आनन्द की प्राप्ति होती है।

भारतीय संगीत में अनेक राग हैं। इनमें रागों को मुख्य राग माना गया है। रागों के कई प्रकार भी मिलते हैं। पतले एवं हल्के रागों को रागिनी (राग की पत्नी) कहा जाता है। इसी प्रकार मिलते जुलते रागों को रागपुत्र कहा गया है। रागिनियों एवं रागपुत्रों की संख्या 84 से लेकर 108 तक मिलती है।

कुछ विशेष राग विशेष समयकालों में विकसित हुआ है जैसे

राग	भाव	समय	ऋतु
1. हिण्डोला	मिठास	प्रभात	जुलाई-अगस्त
2. मैघ	साहस	मध्याह्न	जुलाई-अगस्त
3. दीपक	करुणा	मध्याह्न	मई - जून
4. भैरव	शांत	प्रभात	सितम्बर-अक्टूबर
5. मालकौंस	विश्राम	मध्यरात्रि	जनवरी-फरवरी
6. वागेश्वरी	रुमानी	मध्यरात्रि	दिसम्बर-जनवरी
7. बहार	आनन्द	मध्यरात्रि	मार्च-अप्रैल

महत्वपूर्ण रागों से परिचय

- ① राग भैरव - यह सभी रागों का स्वामी राग है। इसकी उत्पत्ती भगवान शिव के कण्ठ से मानी जाती है। इसे प्रातः काल में शक्ति के जागरण के लिए गाया जाता है।
- ② राग बिलावल - यह राग भैरव का रागपुत्र है। यह प्रेम, सौभाग्य तथा सौंदर्य का प्रतीक माना जाता है।
- ③ श्री राग - यह रण क्षेत्र में गाया जाने वाला राग है। माना जाता है कि इसकी उत्पत्ती योद्धाओं के तलवार की खनक एवं धनुष के प्रत्यंचा के हंकार से हुई है। रानाभाऊ का ढोला मारू इसका उदाहरण है।
- ④ राग तोड़ी - यह विरह एवं अकेलेपन का राग है। शोक पूर्ण प्रेम का प्रतीक है। यह रात्रिकालीन है। तानसेन तोड़ी गायन के लिए प्रसिद्ध थे।

संगीत की कुछ महत्वपूर्ण शब्दावलि

सरगम - संगीत सीखने के दौरान प्रथम अभ्यास सरगम कहलाता है। इसके तहत संगीतकार स्वरो तथा रागों की प्रारम्भ में सीखने वालों को समझाते हैं।

अलाप - स्वरो को धीरे-धीरे विस्तार देते हुए राग निकालना अलाप कहलाता है। अलाप काफी शुद्ध माने जाते हैं। मुख्यतः भक्ति संगीत के तहत अलाप का प्रस्तुतीकरण किया जाता है। अलाप गायन मुख्यतः दो रूपों में प्रस्तुत किया जाता है।

(i) ओमकार

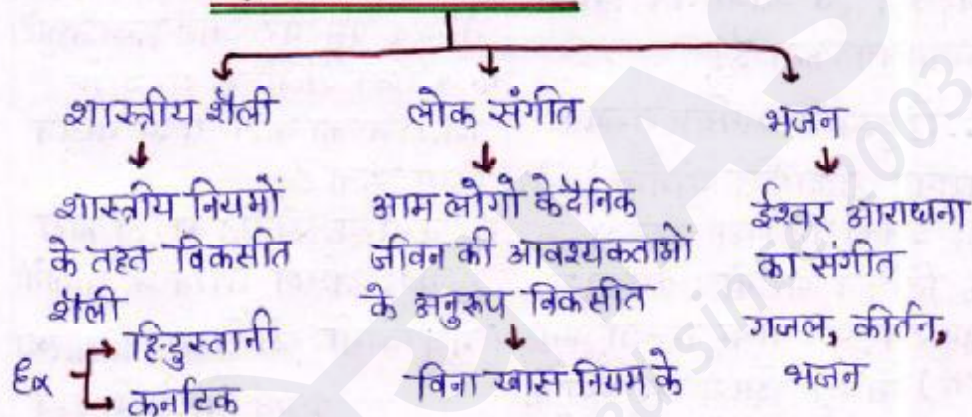
(ii) नौम-रोम (ध्रुपद गायन में)

तान - जब स्वरों की बलपूर्वक गाया जाता है तो इसे तान कहा जाता है।

खटका - खटका स्वरों की गति को बतलाने के लिए प्रयोग किया जाता है। इसे भी बलपूर्वक गाया जाता है।

मुर्की - स्वरों के तेज द्युभाव को मुर्की कहा जाता है।

संगीत की शैलियाँ



शास्त्रीय संगीत शैली

निश्चित नियमों एवं निर्देशों से विकसित भारत की परम्परागत संगीत को शास्त्रीय संगीत कहा जाता है। शास्त्रीय संगीत के भारत में मुख्यतः दो प्रकार हैं।

हिन्दुस्तानी शैली

1. यह मुख्यतः उत्तर भारत की संगीत शैली है जो विध्य से हिमालय के बीच विशेष रूप से प्रचलित रही है।

2. हिन्दुस्तानी शैली एक मिश्रित शैली है जो प्राचीन भारतीय परम्परा एवं मध्यकालीन परम्परा के मेल से बनी है।

कर्नाटक शैली

1. यह मुख्यतः दक्षिण भारत की शास्त्रीय संगीत शैली है जो वर्तमान तमिलनाडू, केरल, आन्ध्र एवं कर्नाटक राज्यों में परम्परागत रूप से विकसित हुई।

2. यह पूर्णतः स्वदेशी संगीत शैली है जो बाह्य प्रभाव से

3. यह भाव प्रधान शैली है इसमें प्रस्तुतीकरण के दौरान भाव पक्ष पर विशेष बल होता है।

4. हिंदुस्तान संगीत शैली में राग सिंद्धात एवं नियमों का कड़ाई से पालन किया जाता है। आज भी संगीतकार भरतमुनि द्वारा निर्देशित एवं व्यवस्थित नियमों का पालन करते हैं।

5. हिंदुस्तानी संगीत मुख्यतः घराना आधारित संगीत शैली है। इसका विकास उत्तर भारत के विभिन्न घरानों (लाखनऊ, बनारस, पटियाला, दिल्ली, जयपुर etc) में गुरु शिष्य परम्परा के तहत हुआ है। वर्तमान में भी यह घराने अस्तित्व मान हैं।

से रहित होकर विकसित हुई है अतः इस पर केवल हिंदू परम्परा का प्रभाव दिखायी देता है।

3. यह मुख्यतः बौद्धिक एवं आध्यात्मिक (Intellectual & Spiritual) शैली है। इसमें भाव पक्ष पर अधिक जोर न देकर बौद्धिक पक्ष पर जोर दिया जाता है।

4. कर्नाटक शैली में भी राग सिद्धान्त का कठोरता से पालन किया जाता है।

5. कर्नाटक संगीत का विकास मुख्यतः दक्षिण भारत के आचार्यों (मुद्युत्स्वामी, दीक्षितार, विचारण्य) एवं मंदिरों में रहने वाली देवदासियों के योगदान से हुआ।

Q. शास्त्रीय संगीत से आप क्या समझते हैं? शास्त्रीय संगीत की हिंदुस्तानी एवं कर्नाटक शैलियों में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

Q. भारतीय शास्त्रीय संगीत की हिंदुस्तानी एवं कर्नाटक शैलियों में तुलना कीजिए?

हिन्दुस्तानी संगीत की कुछ महत्वपूर्ण गायन शैलियाँ

↳ ध्रुपद, धमार/बोरी हुमरी (बनारस घराना) ख्याल (जौनपुर घराना) टप्पा, तराना, कल्वाली, गजल

ध्रुपद - ध्रुपद काफी प्राचीन गायन शैली है जिसके साक्ष्य सामवेद में मिलते हैं। इसमें शब्दों के उच्चारण का विशेष महत्व होता है तथा यह निश्चित नियम के तहत प्रस्तुत किया जाता है। ध्रुपद गायन में अक्षरों के साथ संस्कृत मंत्रों जैसे ऊँ चंटे नोम नोम आदि के उच्चारण द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। गाने के लिए हृदय एवं प्रवर्धों पर विशेष बल दिया जाता है।

प्राचीन भारत में ध्रुपद गायन मुख्यतः देवदासियों द्वारा मंदिरों में किया जाता था। ऋषि, मुनि भी ईश्वर की भगवत्पूजा के लिए ध्रुपद गाते थे। मध्य काल में सूफी संतों एवं दरबारी संगीतकारों द्वारा ध्रुपद के विकास में काफी सहयोग दिया गया। अमीर खुसरौ, स्वामी हरिदास, तानसेन, जवाहिर के शासक मानसिंह तोमर, बैजू बबरा आदि ध्रुपद के महत्वपूर्ण गायक थे।

वर्तमान में डागरबन्धु, गंडेचा बन्धु, पं० सीताराम तिवारी तथा रामचन्द्र मलिक ध्रुपद के महत्वपूर्ण गायक हैं।

वानियाँ ध्रुपद की विभिन्न शैलियों को वानिया कहा जाता है।

- उदाहरण - डागर बानी
- नौहारवानी
- गोवरहारवानी

धमाल / वोरी - यह ध्रुवपद की शैली में गाया जाना वाला गीत है जिसमें 14 मात्राओं का प्रयोग किया जाता है। इसमें राधा कृष्ण के प्रेम विषय की आधार बनाकर गायन किया जाता है। वृन्दावन तथा मथुरा क्षेत्र में होली के अवसर पर विशेष रूप से गाया जाता है।

खयाल - खयाल ध्रुवपद शैली के पैटर्न पर गाये जाने वाला गीत है लेकिन इसका स्वरूप लचीला होता है माना जाता है इसका इजाद जौनपुर राज्य के संस्थापक हुसैन शाह सरकी ने किया था। [कुछ विद्वान अमीर खुसरो को अविष्कारक मानते हैं]

ठुमरी - यह भाव प्रधान गीत है। जिसमें नृत्य संगीत तथा नाटक तीनों का प्रस्तुतीकरण किया जाता है मुख्यतः उत्तर भारत में प्रचलित है। ठुमरी का उदय लखनऊ के नवाब वाजिद अली शाह के दरबार से माना जाता है वर्तमान में पटियाला बनारस लखनऊ तथा जयपुर धराने ठुमरी गायन के लिए प्रसिद्ध है।

शिबदेखरी देवी . रसूलन बाई . बैगम अख्तर तथा गिरिजा देवी ठुमरी की प्रसिद्ध गायिकाएँ रही हैं।

टप्पा - यह चरवाहों की गायन शैली है इसके तहत जानवरों के पैरों के सुरों से निकलने वाले आवाज को पकड़कर गायन किया जाता है इसका विकास मुख्य रूप से पश्चिमी उत्तर भारत में हुआ।

तराना - यह ऐसी गायन शैली है जिसमें अर्थहीन शब्दों जैसे ती. तुम. तारा आदि का प्रयोग किया जाता है।

शब्द भले ही अर्थहीन हो लेकिन इनका लय काफी सुरीला होता है। माना जाता है कि तराना का विकास भरवी तथा फारसी प्रभाव से हुआ है।

गजल - यह ईश्वर के आराधना का संगीत है जिसे सुफियों द्वारा विकसित किया गया। बहादुर शाह जफर, फिरोज गोरखपुरी, मिर्जा गालिब, जगदीश सिंह, भैरवी हसन [पाक] प्रमुख गजल रचै हैं।

कव्वाली - ईश्वर भजन का संगीत है विकास मुख्यतः सूफी संतों द्वारा मध्यकाल में किया गया कव्वाली हमेशा समूह में प्रस्तुत किया जाता है।

कर्नाटक संगीत के प्रमुख गायन शैलियाँ

हिंदुस्तानी गायन शैली की भाँति कर्नाटक शैली में भी गाने के विविध प्रकार हैं जैसे-

कृति (Creation) - यह कर्नाटक शैली का काफी प्राचीन गीत है जिसके साक्ष्य संगम ग्रंथों में मिलता है। यह भाक्तिमय गीत है। उत्तर भारत के ख्याल जैसा होता है इसे तीन चरणों में प्रस्तुत किया जाता है। पल्लवी, अनुपल्लवी, चरण

पदम - यह कर्नाटक शैली की काफी धीमी शैली है। इसमें ध्रुवपद जैसी गंभीरता एवं लय होता है।

जवालि - यह हल्के संरचना के प्रेममयी गीत है इसमें नृत्य नाटक तथा गायन तीनों शामिल होता है। स्वरूप में यह ठुमरी जैसा होता है।

तिल्लाना - इसमें शब्दों के अर्थ के बजाय लय की महत्व दिया जाता है इस गीत के अधिकांश बोल अर्थहीन होते हैं। उत्तर भारत के तराना जैसा होता है।

दक्षिण के प्रमुख संगीतकार

कनटिक शैली का विकास अनेक आचार्यों एवं संगीत-कारों के अत्यंत सहयोग के कारण हुआ है जिसमें कुछ प्रमुख चर्चित संगीतकार निम्न हैं।

① **त्रिमूर्ति** - इसके तहत त्यागराज, मुधुस्वामी दीक्षितार तथा श्यामशास्त्री की जोड़ी होती है।

② **पुरुन्दरदास** - कनटिक

③ **रामदास एवं अन्नाचार्य** -

मध्यकालीन उत्तर भारतीय संगीत विभूतियाँ [सुल्तनतकालीन]

1. **अमीर खुसरो** - अमीर खुसरो का जन्म पटियाली (U.P.) में हुआ इन्होंने उर्दू + हिन्दी के विकास में काफी योगदान दिया इसलिए इन्हें “ हिंद का तोता ”

- अमीर खुसरो मूलतः सूफी संत थे।
- निजामुद्दीन औलिया के शिष्य थे [असिद्ध चिश्ती संत]
(गुरु-शिष्य दोनों ने 7 सुल्तानों का राज्य देखा था)
इन्होंने अपने ग्रंथ नुहसिपिहर् में भारतीय महिमा मंडन किया है।
- अमीर खुसरो ने सितार तथा तबला का आविष्कार किया इन्होंने ब्याल तराना कौल जैसे गायकी को लोकप्रिय बनाया।

2. **गोपाल नायक** - ये दक्षिण भारत के संगीतकार थे अलाउद्दीन खिलजी ने इन्हें दक्षिण भारत से बुलाया था।

अमीर खुसरो एवं गोपाल नायक के बीच संगीत प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था इसकी सूचना राग दर्पण से मिलती है।

3. **शल्वाराम** - यह विजयनगर के शासक सदाशिव के मंत्री थे साथ ही प्रसिद्ध संगीतकार थे। उन्होंने "स्वरमेलकलानिधि" नामक संगीत पुस्तक की रचना की थी।

मुगलकालीन संगीत विभूतियाँ

1. **मानसिंह तोमर** - यह ग्वालियर के शासक थे। उन्होंने "मानकौतुहल" नाम से संगीत पर अत्यंत महत्वपूर्ण पुस्तक की रचना की [संस्कृत भाषा में] और औरंगजेब के काल में फकी ठल्ला ने मानकौतुहल का 'रागदर्पण' नाम से फारसी में अनुवाद किया।
2. **मुन्गीस** - यह भी ग्वालियर के संगीतकार थे।
3. **बाघवहादुर** - यह भालवा के शासक एवं उच्च कोटि के संगीतकार थे। बाद में यह अकबर के दरबार में रहने लगे।
4. **तानसेन** - यह रीवा के शासक रामचन्द्र के दरबारी थे। बाद में अकबर के दरबार के प्रमुख संगीतकार बने। इनका प्रारम्भिक नाम "रामतनुषाण्डे" था। बाद में उन्होंने इस्लाम धर्म ग्रहण कर लिया। तानसेन अनेक महत्वपूर्ण रागों जैसे- रागदीपक, भिंगा की तोड़ी, भिंगा की भल्लार आदि रागों की जानी के लिए प्रसिद्ध थे।
5. **स्वामी हरिदास** - यह तानसेन के गुरु थे।
6. **बैजू बावरा** - अकबर के समकालीन प्रसिद्ध संगीतकार थे।
(लेकिन दरबार में नहीं दरबार के बाहर)
7. **अदरंग - सदारंग** - ये दोनों उच्चकोटि के संगीतकार थे जो उत्तर मुगल शासक मुहम्मद शाह रंगीला के दरबारी थे।

जुगलबंदी

संगीत का एक प्रयोगात्मक रूप है। इसमें गायकों एवं वादकों द्वारा जोड़ा बनाकर प्रस्तुतीकरण किया जाता है।

गायक	वादक	वादक
+	+	+
गायक	वादक	गायक

हाल में हिंदुस्तानी एवं कर्नाटक शैली के अनेक कलाकारों ने दोनों शैलियों के मिश्रण द्वारा काफी बेहतर जुगलबंदी संगीत का विकास किया है।

- जैसे- 1. भीमसेन जोशी - हिंदुस्तानी शैली गायक
2. अमजद अली खान - सरोदवादक
3. बालमुरली कृष्णा - कर्नाटक शैली नाटक
4. लाल गुप्ती जयराम - बायलिन वादक

संगीत में धराना परम्परा

धराना शब्द धर(गृह) से उत्पन्न हुआ है भारतीय संगीत सैकड़ों वर्षों के दौरान गुरु-शिष्य परम्परा द्वारा विकसित हुआ है। जिसे धराना परम्परा कहा जाता है। वर्तमान में देश के विभिन्न हिस्सों में कई धराने संगीत परम्परा को जीवंत बनाए हुए हैं।

धराना	कलाकार
1. किराना	पं. भीमसैन जोशी, गंगुबाई हंगल, बाहिद खान
2. पटियाला	नजाकत अली खान, सलामत अली खान, गुलाम अली (Indian)
3. जयपुर	रजव अली खान, किशोरी अमनकर → हाल ही में उनका निधन हो गया है ये ख्याल गायिकी की प्रसिद्ध गायिका थी। पद्मविभूषण, पद्म भूषण से सम्मानित थी। उनकी माता भोगुबाई कुडिकर भी जयपुर धराने की प्रसिद्ध गायिका रही थीं।
4. बनारस	गिरिजा देवी
5. लखनऊ	वेगम अख्तर
6. आगरा / रंगीला	हाजी सुजैन खान
7. रामपुर	हुसैन खान, गुलाम मुस्तफा खान
8. उदौर	पं. जसराज, जे. मणिराम

वाद्य / वाद्य यंत्र (Musical Instruments)

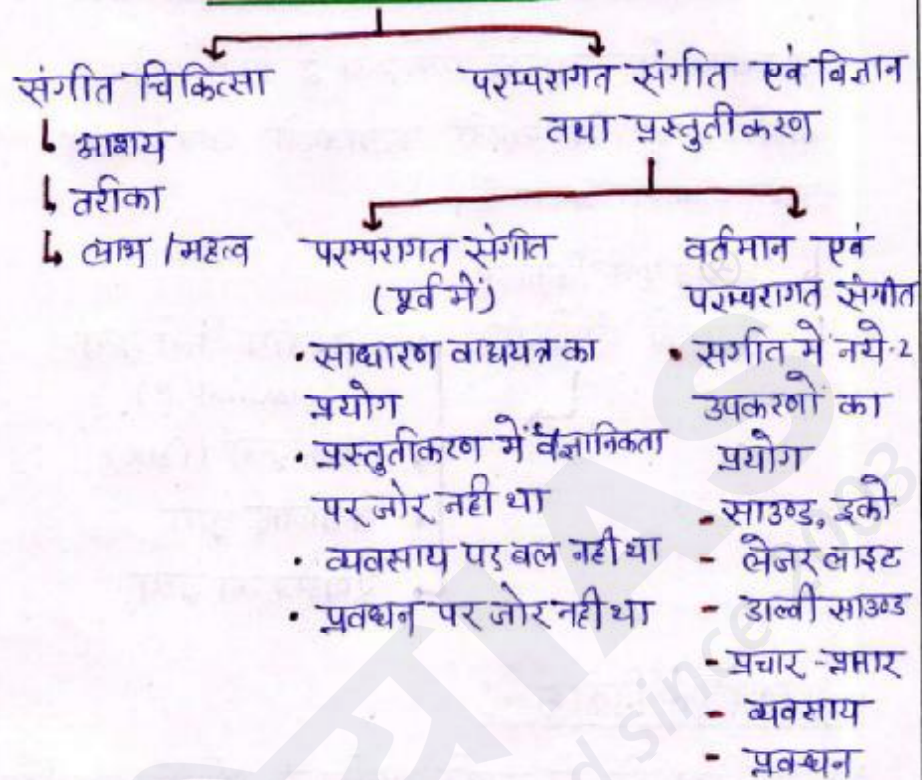
संगीत एवं नृत्य के साथ-साथ भारत में अतिप्राचीन काल से ही अनेक वाद्ययंत्रों का विकास किया गया। वर्तमान में भी हजारों वर्ष पूर्व की अनेक वाद्ययंत्रों का संगीत में इस्तेमाल किया जाता है।

वाद्ययंत्रों को उनके ध्वनि उत्पादकता के ढंग बनाने के तरीके तथा महाप्राण के आधार पर चार भागों में बांटा जाता है।

वाद्ययंत्रों का वर्गीकरण

1. फूंककर बजाने वाले वाद्ययंत्र - [Wind Instruments]
 - ↳ वांसुरी, शहनाई, सुरनाई, खंखं, कर्णा, नागास्वरम्, मोहरी, सिधम, पुंगी
2. पीटकर बजाने वाले वाद्ययंत्र [Percussion Instrument]
 - ↳ ढोल, तबला, मृदंग, चेदा, खजीरा, डमरु, घटम्
3. तार वाले वाद्ययंत्र [Stringed Instruments]
 - ↳ सितार, वीणा, सारंगी, सरोद, तम्बूरा, तनपुरा, गिटार, रावणहत्या, दिलरुबा, हारमोनियम
4. घन/ ठोस वाद्ययंत्र [Solid Instrument]
 - ↳ घटम्, जलतरंग

संगीत एवं विज्ञान



- Q. संगीत चिकित्सा से आप क्या समझते हैं इसके क्या लाभ हैं।
- Q. संगीत चिकित्सा के विभिन्न रूपों / तरीकों की चर्चा करते हुए इसके महत्व पर प्रकाश डालिए
- Q. किस प्रकार विज्ञान ने परम्परागत संगीत के प्रस्तुतीकरण एवं शैली को बदल दिया है उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

भारतीय नृत्य INDIAN DANCES

प्रदर्शनकारी कला का एक रूप है जिसे अनेक शारीरिक मुद्राओं, चालों, कदमतालों भाव के द्वारा प्रस्तुत किया जाता है।

↳ उद्भव एवं विकास

↳ नृत्य की शैलियाँ



- शास्त्रीय शैली नृत्य (Classical 8)
- लोक नृत्य (Folk)
- कबीलाई नृत्य
- रणक्षेत्र का नृत्य

उद्भव एवं विकास :-

भारतीय नृत्य की जड़े काफी प्राचीन हैं। जिसके प्रारम्भिक साक्ष्य पाषाण काल में गुफा चित्रकारी के रूप में प्राप्त होता है। वेदी, महाभारत, रामायण व पुराण में नृत्यों के अनेक उदा. प्राप्त होते हैं। भरतमुनि का नाट्यशास्त्र भारतीय शास्त्रीय नृत्य पर अत्यंत महत्वपूर्ण पुस्तक है। इसमें नृत्य के अनेक निपटों एवं निर्देशों की चर्चा है। आज भी शास्त्रीय कलाकार / नृत्यकार नाट्यशास्त्र के निपटों के तहत नृत्य को प्रस्तुत करते हैं। भारतीय नृत्य अनेक देवी-देवताओं को समर्पित करते हुए विकसित हुए हैं। कई नृत्य रूपों का उद्भव देवी-देवताओं को से माना गया है। जैसे लोडव नृत्य, लास्य नृत्य

शिव तांडव नृत्य :- तांडव नृत्य हिंदू देवता शिव द्वारा प्रस्तुत किया जाने वाला एक दैवीय नृत्य है जो सृष्टि के विनाश और पुनर्निर्माण का प्रतीक माना जाता है। भारत के अनेक मंदिरों (जैसे शैलकृत गुफाओं, एलोरा का कैलाशनाथ मंदिर) तथा मंदिरों की दीवारों पर मूर्तिकला एवं चित्रकला में शिव के तांडव नृत्य के अनेक साक्ष्य प्राप्त होते हैं।

हिंदू परम्परा में भगवान शिव को नृत्य के स्वामी तथा ब्राह्मणीय नृतक माना गया है। शिव तांडव का प्रथम साक्ष्य नाट्यशास्त्र में प्राप्त होता है इस ग्रन्थ में भरतमुनि ने शिव तांडव के तहत 32 अंगहारों तथा 108 करणों से सभी नृत्य की मुद्रायें हैं जिसका भगवान शिव ने प्रदर्शन किया था। शास्त्रों में तांडव नृत्य के सात प्रकार मिलते हैं। जैसे-

1. आनंद तांडव
2. त्रिपुरा तांडव
3. सांख्य तांडव
4. कलिका तांडव
5. उमा तांडव
6. संहार तांडव
7. गौरी तांडव

तांडव नृत्य बुद्ध तथा रक्षा के भाव में प्रस्तुत किया जाने वाला नृत्य है। परम्परागत रूप में भगवान शिव को एक बौने राक्षस के ऊपर तांडव करते हुए प्रदर्शित किया जाता है राक्षस को अज्ञान का प्रतीक माना जाता है तथा इसे अज्ञान पर ज्ञान की विजय के रूप में समझा जाता है।

हिंदू परम्परा में यह माना जाता है कि ब्राह्मण्ड के चलायमान के लिए गति एवं लय आवश्यक है बिना गति एवं लय के जीवन नहीं है। हिंदू परम्परा के अनुसार शिव तांडव से ही ब्रह्माण्ड में लय और गति का संचार होता है इस प्रकार शिव तांडव जीवनदायिनी नृत्य का प्रतीक है।

लास्य नृत्य -: यह हिंदू देवी पार्वती द्वारा प्रस्तुत किए जाने वाला नृत्य है कुछ विद्वानों के अनुसार - यह नृत्य तांडव नृत्य का ही स्त्रीत्व रूप है माना जाता है कि इस नृत्य को शिव ने ही स्त्री रूप में प्रस्तुत किया था। यह कोमल तथा सहज नृत्य / सौम्य है। इसके दो प्रकार माने जाते हैं।

- ① जरिता लास्य
- ② यावक लास्य

भारतीय शास्त्रीय नृत्य शैलियां

संगीत नाट्य एकेडमी शास्त्रीय नृत्यों की मान्यता प्रदान करती है। वर्तमान में 8 शास्त्रीय नृत्य हैं।

1. भरतनाट्यम (तमिलनाडु)

1. भरतनाट्यम ऐसा शास्त्रीय नृत्य है जिसे भाव (भ) राग (र) तथा ताल (त) के बराबर समापोजन के साथ प्रस्तुत किया जाता है। इसे स्त्री एवं पुरुष दोनों प्रस्तुत कर सकते हैं।
2. यह काफी प्राचीन नृत्य है जिसकी जड़े संगम साहित्य व नाट्यशास्त्र (शिल्पादिकम्) में प्राप्त होता है। इस नृत्य परम्परा के विकास में देवदासियों का काफी महत्वपूर्ण योगदान रहा है।
3. भरतनाट्यम का मूल विषय धार्मिक होता है इसके तहत नृतक रामायण महाभारत तथा कृष्ण लीला की कथाओं का नृत्य नाटक के माध्यम से प्रस्तुतीकरण करते हैं।
4. भरतनाट्यम में प्रस्तुतीकरण के दौरान नृतकों एवं नृतकियों द्वारा हाथों के विभिन्न अङ्गुली के मुद्राओं पदम एवं ताल एवं मुखों के विभिन्न भाव के प्रदर्शन पर काफी जोर दिया जाता है। यह काफी लम्बे समय तक प्रस्तुत किए जाने वाला नृत्य है इसके सात चरण होते हैं।

1. अलारिपु - प्रणाम की मुद्रा
2. नातिस्वरम् - नृत्य का आरंभ
3. शब्दम् - शब्दों के बोल प्रस्तुत करना
4. चरणम् - पद संचालन, लय एवं ताल
5. पदम् - शृंगारिक प्रदर्शन
6. तिल्लाना - दुयलुम्बी की तीव्र गति का प्रदर्शन
7. श्लोका - अन्तिम अवस्था

5. भरतनाट्यम में मृदंग, वीणा, बांसुरी तथा वायलिन का प्रयोग किया जाता है। इसके नृत्यांगों का वस्त्र एवं परिधान काफी आकर्षक होता है। इसके तहत महिलाएं सिल्क की साड़ी, गर्दन वरु, चमकते आभूषण बालों में चमेली की माला तथा पैरों में घुघरु पहनती हैं।

6. वर्तमान में इसके मुख्य कलाकार निम्न हैं -

रुक्मिणी देवी, पाला सरस्वती, यामिनी, कृष्णमूर्ति
मृणालिनी सारामाई, सोनल मानसिंह, लीला रंगमन
शांता राव, सविता शास्त्री

2. मोहिनीअट्टम् (केरल) Only female

1. यह केरल का शास्त्रीय नृत्य है जिसमें पौराणिक कथाओं का नृत्य के माध्यम से प्रस्तुतीकरण किया जाता है। इसे केवल महिलाएँ प्रस्तुत करती हैं। इसके तहत महिलाएं गोलाकार गतियों, पद्म ताल तथा गहरी भक्तिव्याप्ति या प्रदर्शन करते हुए चाल की दिशा में आंखों का मनमोहक प्रयोग करते हुए नृत्य करती हैं।

2. इसका उल्लेख महाभारत तथा पुराणों में प्राप्त होता है।

3. मोहिनीअट्टम् में महिलाओं को पोशाक एवं शैष भूषा काफी सरल एवं आकर्षक होती है। इसमें नृत्यांगनाएँ केरल की सिल्क की कसाबु साड़ी (सफेद साड़ी पर पीले रंग का कांडर) पहनती हैं। गले में हार, कानों में बाली तथा बालों में चमेली की माला धारण करती हैं।

4. इसके समसामयिक कलाकार हैं।

गोपिका बर्मा, पल्लवी कृष्णा, सुनंदा नय्यर, राधादत्ता
जया प्रभा मेनन,

3. कथकली (केरल)

1. कथकली भी केरल का शास्त्रीय नृत्य है जिसकी जड़ें काफी प्राचीन हैं इसके मूल विषय रामायण तथा महाभारत से लिए गए हैं।

2. कथकली नृत्य के तहत नृतक कथाओं का नाटकीय भावनाओं के साथ प्रस्तुतीकरण करते हैं इसे काफी वैज्ञानिक माना जाता है। क्योंकि इसमें नृतक शरीर एवं भावनाओं पर काफी नियंत्रण करते हुए नृत्य करते हैं।

3. यह मुख्यतः पुरुषों द्वारा प्रस्तुत किया जाने वाला नृत्य है।

इसमें नृतक बोलते नहीं हैं केवल कथोपकथन करते हैं। बिना बोलें ही वे विभिन्न मुद्राओं तथा हावभाव के द्वारा नृत्य प्रस्तुत करते हैं इसके लिए वे 24 मूल मुद्राओं तथा 440 प्रतीकों का प्रयोग करते हैं। मंत्र पर हृष्टभूमि मैगाफ वृद्धन चलता रहता है तथा उसी के अनुरूप नृतक नृत्य करते हैं यह काफी लम्बा नृत्य है जो लगभग रातभर चलता है।

4. कथकली नृत्य में दूसरी कलाएँ भी जुड़ी होती हैं इसके तहत नृतक काफी रंगीन पोशाक पहनते हैं। चेहरे पर विशेष सान सन्ना का प्रयोग करते हैं टरा लाल काला एवं पीले रंगों का लेप किया जाता है सिर पर मुकुट (शिरः प्रवण) धारण करते हैं।

5. प्रमुख कलाकार - कुन्नुस्वरुप, डॉकरकुट्टी, कलामण्डलम्, कृष्णा, माधव पणिकर,

4. ओडिसी (उड़ीसा)

- ① यह उड़ीसा का शास्त्रीय नृत्य है जो काफी प्राचीन है। इसका साक्ष्य नाट्यशास्त्र तथा रानीगुम्फा अभिलेख में मिलता है। इस नृत्य का विकास उड़ीसा के मंदिरों की देवदासियों द्वारा किया गया। प्रारम्भ में इसे केवल मंदिरों में प्रस्तुत किया जाता था बाद में इसे दरबारों में भी प्रस्तुत किया जाने लगा।
- ② ओडिसी में मुख्यतः पौराणिक कथाओं जैसे राधा एवं कृष्ण की प्रेमकथा का प्रस्तुतीकरण किया जाता है भाव एवं प्रदर्शन के मामले में यह भरतनाट्यम् जैसा होता होता है। ओडिसी की मुख्य विशेषता त्रिमंगा की मुद्रा है। इसमें नृतक भावनाओं का व्यापक प्रदर्शन करते हुए शिर शरीर तथा पैरों को लचीले ढंग से मोड़ते हुए नृत्य करते हैं। यह स्त्री एवं पुरुष दोनों द्वारा प्रस्तुत किया जाता है।
- ③ वर्तमान कलाकार - सोनल मानसिंह, माधुरी मुग्दल, इन्दु निरहमान, सुजाता महापात्रा, काली चरण -

5. कथक (उत्तर-भारत)

1. कथक का शब्दिक अर्थ कहा होता है। यह कथामो के माध्यम से प्रस्तुत किया जाने वाला उत्तर भारत का नृत्य है।
2. यह काफी प्राचीन नृत्य है। रामायण महाभारत तथा पुराणों में इसके साक्ष्य मिलते हैं उत्तर भारत में कथक का विकास हिन्दू तथा मुस्लिम दोनों परम्पराओं के मेल से हुआ है। प्राचीन भारत में कथक मुख्यतः धार्मिक उत्सव एवं मंदिरों में प्रस्तुत किया जाता था लेकिन मध्यकाल में यह मुस्लिम परम्परा के तहत दरबारों में प्रस्तुत किया जाने लगा।

3. कथक में मूलतः तीन तत्व शामिल होते हैं।
 - (i) नृत - ताल एवं लय
 - (ii) नृत्य - कथावर्णन के साथ नृत्य करना
 - (iii) नाटक - अभिनय करना
4. कथक में नृतक पैरी में बहुसंख्यक चुद्यरु धारण करते हैं। इस नृत्य को सीधे पैरी द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। इसके कलाकार तेजकदम तालों का प्रदर्शन करते हुए पैरी से चुद्यरुओं की प्रदर्शित करते हुए तेज चक्कर लगाते हुए नृत्य करते हैं।
5. कथक नृत्य में नृतकों का पोशाक काफी चमकीला होता है। महिलाएं डिंडू प्रभाव के तहत लहंगा एवं चौली तथा पुरुष मुहम्मि प्रभाव के तहत चूड़ीदार पायजामा, कमीज तथा मंगरखा धारण करते हैं।
6. कथक नृत्य मुख्यतः उत्तर भारत में लखनऊ, जयपुर तथा बनारस घरानों में विकसित हुआ। लखनऊ के नवाबी ने इसे विशेष संरक्षण दिया।
7. वर्तमान कलाकार-
बिरजू महाराज, लच्छू महाराज, शम्भू महाराज,
अचन महाराज, सितारा देवी, ओम्ना नारायण,
कुलकर्णी भट्ट ।

6. कुचिपुड़ी (आन्ध्रप्रदेश)

1. यह आन्ध्रप्रदेश का शास्त्रीय नृत्य है। इसका विकास आन्ध्र प्रदेश के छोटे से गांव कुचलापुरम् से माना जाता है। सिद्धेश्वर योगी द्वारा विकसित इसे स्त्री-पुरुष दोनों प्रस्तुत करते हैं।

2. प्राचीन काल में कुचिपुड़ी नृत्य केवल मंदिरों में प्रस्तुत किया जाता था। इसका उल्लेख संगम साहित्य में मिलता है। लेकिन 16वीं शताब्दी से यह दरबारों में भी प्रस्तुत किया जाने लगा। मठ: इसे दो शैलियों में प्रस्तुत किया जाता था।
- (i) नृत्ता मैला (एकल नृत्य) - देवदासियों द्वारा मंदिरों में प्रस्तुत किया जाने वाला
- (ii) नाट्य मैला (समूह नृत्य) - समूह में किया जाने वाला (दरबारी नृत्य)
3. इसमें कृष्ण एवं रत्नमणी का नाटकीय भावना के साथ प्रस्तुतीकरण किया जाता है। इसके प्रस्तुतीकरण के दौरान मंच पर राज-सज्जा का विशेष ध्यान रखा जाता है। श्रृंगार वृत्ति एवं अठुष्टान्न द्वारा इसका प्रारम्भ होता है।
4. कुचिपुड़ी के तहत मठका नृत्य काफी प्रसिद्ध है। इसमें नृतक पानी से भरे मटके को सिर पर रखकर पीतल की थाली पर पैर जमाकर नृत्य करती है। थाली पर उगका नियंत्रण काफी आश्चर्यजनक होता है। थाली पर नृत्य करने के बावजूद मटके से एक बूंद पानी भी नीचे नहीं गिरता है।
5. प्रमुख कलाकार
स्वप्न सुन्दरी, राजा-राधा रेड्डी, लक्ष्मी नारायण
शास्त्री यागिनी कृष्णमूर्ति * रती. आर
आचार्यल्लू

७. मणिपुरी नृत्य (मणिपुर)

1. यह मणिपुर का शास्त्रीय नृत्य है। 15वीं सदी के पूर्व यह केवल वन देवता से सम्बन्धित नृत्य होता था। 16वीं सदी 17वीं सदी से वैष्णव एवं शैव परम्परा के प्रभाव के तहत इस नृत्य में कृष्ण लीला से सम्बन्धित विषयों एवं पौराणिक कथाओं का प्रदर्शन किया जाने लगा।
2. इसे स्त्री-पुरुष दोनों द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। लास्य तथा तांडव दोनों रूपों में इसे किया जाता है। यह एकल एवं समूह दोनों प्रकार का नृत्य है। महिलाएँ समूह में नृत्य करती हैं तथा पुरुष एकल एवं समूह दोनों में नृत्य करते हैं। एकल-समूह दोनों में टोल भजिरा बांसुरी आदि का प्रयोग करते हैं।
3. मणिपुरी नृत्य में महिलाओं की पोशाक काफी आकर्षण होता है। यह मणिपुर का स्थानीय परिधान धारण करती हैं। इसमें महिलाएँ चमकीली दाढ़रा धारण करती हैं। जिसमें गोलाकार गता लगा होता है। इसे कुमीन कहा जाता है। वे पारदर्शी ओढ़नी ओढ़े वाली में झालर तथा सिर पर मुकुट धारण किए हुए होती हैं। पुरुष साधारण थोटी-कुर्ता पहनते हैं तथा माथे पर चन्दन का लेप लगाते हैं।
4. मुख्य कलाकार - झावेरी वहने (दर्शना, मैना, रंजना सुब्बरा)

8. सत्रीया / सतरिया (असम)

1. यह असम का शास्त्रीय नृत्य है जिसे 2003 में संगीत नाटक अकादेमी द्वारा शास्त्रीय संगीत का दर्जा दिया गया। सत्रीया का शाब्दिक अर्थ 'मठ' होता है। भक्त पारम्परिक रूप से वैष्णव मठों में प्राप्त किए जाने वाला नृत्य रहा है। वर्तमान में सार्वजनिक मंचों पर भी प्रस्तुत किया जाता है।
2. इस नृत्य का विकास 15-16 वीं सदी में महान वैष्णव संत भगवत् शंकरदेव द्वारा किया गया। इसके तहत शंकरदेव तथा अन्य सगुण संतों द्वारा रचित गीतों को गाया जाता है। (कबीर तुलसी भीरा)
3. इस नृत्य में पौराणिक कथाओं जैसे - कृष्ण लीला का प्रस्तुतीकरण किया जाता है। इसे स्त्री-पुरुष दोनों प्रस्तुत करते हैं। कलाकार असम की साधारण वेश-भूषा को धारण करते हैं। महिलाएं साधारण साड़ी एवं चुड़चुड़ी एवं कमीज धारण करते हैं। इसके नृत्य के दौरान काफी नाटकीय भावना का प्रस्तुतीकरण करते हैं। इसके कई भाग हैं जैसे--
- दशवतार नृत्य
- अपसरा नृत्य
- नटुवा नृत्य
- झूमर नृत्य

लोकनृत्य (Folk Dance)

- ↳ सामुदायिक नृत्य
 - ↳ छऊ, कालबेलिया, घूमर, गिदरा, पुलिअट्टम, कारुगनोक - लोक, मोरुलैम
- ↳ फसल कटाई नृत्य
 - ↳ धिहू, सरहुल, भोजाली, भंगड़ा
- ↳ तट्टु नृत्य
 - ↳ चेरकुला, लूर एवं फाल्गून, उलखई
- ↳ पारम्परिक नृत्य
 - ↳ गरवा, कर्मा, पटा - टा, कुनीता, लहाव, गली
- ↳ मार्शल आर्ट (मुह्य नृत्य)
 - ↳ कलारिपट्टू, थाग - टा

1. सामुदायिक नृत्य (Community Dance)

- a. **छाऊ नृत्य** :- यह बंगाल, बिहार एवं झारखण्ड का नृत्य है। यह मुह्य की शैली में प्रस्तुत किया जाता है। मार्शल आर्ट केवल पुरुषों द्वारा किया जाता है। इसके नृत्यक अनेक प्रकार के मुखौटे का प्रयोग करते हैं।
- b. **कालबेलिया नृत्य** :- यह राजस्थान के अजमेर, पुष्कर क्षेत्र के जनजातियों का नृत्य है। इसे सपेरो का नृत्य भी कहा जाता है। (Unesco के Cultural Heritage listed)

- c. भोजाली- (अन्नपूर्णा देवी) :- यह छत्तीसगढ़ एवं सतपुड़ा के गोंड जनजातियों द्वारा अन्नपूर्णा माता के सम्मान में किया जाता है।
- d. भांगड़ा-: पंजाब फसल कटाई का नृत्य
- e. हजागिरि-: यह त्रिपुरा के स्वांग जनजाति द्वारा मनाया जाता है। इस फसल के तैयार होने पर

3. पारम्परिक नृत्य

- a. गरवा-: गुजरात . नवरात्रि के अवसर पर
- b. कर्मा-: यह कर्मावृक्ष के चारों तरफ शांति एवं खुश-हाली के लिए आरखण्ड, उड़ीसा एवं छत्तीसगढ़ की जनजातियों द्वारा किया जाता है।
- c. पटा-दा-कुनीता-: कर्नाटक में ग्राम देवता के अनुष्ठान में यह नृत्य किया जाता है।
- d. लहाव-: यह असम के जयन्तिया जनजाति द्वारा खुशहाली के लिए किया जाता है इसमें वे देवी पूजा करते हैं।
- e. नाटी-: हिमाचल प्रदेश में दशहरा के अवसर पर किया जाने वाला नृत्य।

4. तत्तु नृत्य

- a. चरकुला -: यह बृज क्षेत्र का नृत्य है। यह चरकुला लकड़ी का एक ढांचा होता है जिसमें दीपक रखा जाता है स्त्रियाँ अपने सिर पर चरकुला रखकर रात्रि में नृत्य करती हैं।
- b. डलखई -: ठंडीसा में शरद ऋतु के आगमन पर महिलाओं द्वारा अपने भाईयों के दीर्धजीवी होने के लिए किया जाता है।
- c. और एवं फाल्गून नृत्य -: हरियाणा का नृत्य है। और केवल महिलाएँ करती हैं और फाल्गून स्त्री एवं पुरुष दोनों करते हैं।

5. मार्शल आर्ट (युद्ध नृत्य)

- a. कलारिपट्ट -: यह केरल का नृत्य है इसमें नायक हाथियारों के साथ नृत्य करते हैं।
- b. धाग-टा -: यह मणिपुर के मैतई जनजाति द्वारा
तलवार भाला किया जाने वाला नृत्य है।

6. अनुष्ठानिक नृत्य

- a. कड़गम -: यह तमिलनाडू का नृत्य है। इसके तहत लोग चावल एवं पानी से भरे मटके को लेकर मरियम्मा देवी (चैचक एवं डेजा से रक्षा करने वाली) के मंदिर जाती हैं।

- b. कागड़ी :- तमिलनाडू इसके तहत श्रद्धालू बांस का काँवर लेकर मरगुन के मंदिर जाते हैं। बुरी भात्मा से रक्षा के लिए किया जाता है।
- c. भक्ता :- उड़ीसा इसके तहत ग्रामीण जलते हुए कोयला एवं काले पर नृत्य करते हैं। इसमें तांत्रिक प्रभाव होता है।
- d. लाई हरोवा :- मणिपुर माइवा पुजारियों द्वारा किया जाता है। यह दृष्टि के विनाश एवं रचना का प्रतीक माना जाता है।

लड़कियों के वेश में लड़कों का नाच

- ① कच्चा नागा - जम्मू & कश्मीर
- ② गोती पुमा - असम, उड़ीसा
- ③ थरुआ - तराई क्षेत्र एवं उत्तराखण्ड
- ④ सन्निया - असम परम्परागत रूप से केवल पुरुषों द्वारा किया जाता है। वर्तमान में इसे स्त्री-पुरुष दोनों करते हैं। अब इसे शास्त्रीय दर्जा दिया जाता है।

नाटक एवं रंगमंच

- ↳ उद्भव एवं विकास
- ↳ महत्वपूर्ण नाटक साहित्य
- ↳ वर्तमान एवं परम्परागत नाटक

उद्भव एवं विकास -: भारत में नाटक खेलने की परम्परा भी अति प्राचीन है। नाटक के सर्वप्रथम साक्ष्य ऋग्वेद में "नाटक संवाद" में मिलता है। रामायण ऋग्वेद तथा महाभारत में भी इसकी चर्चा है। मौर्योत्तर काल में भरतमुनि का नाट्यशास्त्र नाटको पर सुव्यवस्थित ढंग से लिखी प्रथम रचना है।

मौर्योत्तर काल में यूनानियों के भारत आगमन से भारत की नाट्य परम्परा और समृद्ध हुई। उन्होंने नाटकों में परदा (यवनिका) का प्रचलन किया।

प्राचीन भारतीय महत्वपूर्ण नाटकशास्त्र -:

प्राचीन भारत में नाटको पर अनेक साहित्य लिखे गए जैसे-

1. महाकवि भास -: (मौर्योत्तर काल) भास ने कई महत्वपूर्ण नाटक लिखे। जैसे - दरिद्रचारुदत्त, पांचरात्र, प्रतिष्ठा, यौगन्धर, स्वप्नवास, गदकता, इसमें अंतिम अत्यंत महत्वपूर्ण नाटक है। इसमें उज्जैन के शासक उद्यावन तथा अवन्ती की राजकुमारी वासवदत्ता के प्रेम प्रसंग का वर्णन है।

2. कालिदास (चन्द्रगुप्त II के दरबारी कवि)

- a. **मालविकाग्निमित्रम्** :- यह पांच अंकों का नाटक है। जिसमें प्रसिद्ध शुंग शासक अग्निमित्र तथा विदिशा की राजकुमारी मालविका के प्रेम प्रसंगों का वर्णन है।
- b. **अभिज्ञानशाकुन्तलम्** :- यह कालिदास के नाटकों में सबसे प्रसिद्ध है जिसकी मूलकथा महाभारत से ली गयी। इसमें राजा दुष्यन्त तथा शकुन्तला के प्रेम एवं मिलन को विषय बनाया गया है।

3. शुद्रक (गुप्तकाल)

मृच्छकटिकम् इनका महत्वपूर्ण नाटक है। इसमें चारुदत्त नाटक ब्राह्मण व्यापारी तथा वसंत सेना (गणिका) के प्रेम प्रसंग का वर्णन है।

इस नाटक में समाज के निचले वर्गों को महत्वपूर्ण पात्र बनाया गया है। इसके पात्र प्राकृत में बोलते हैं। इसमें निचले वर्गों द्वारा शोषणकारी व्यवस्था के प्रति आक्रोश प्रकट किया गया है।

4. विशाखदत्त (गुप्तकाल)

इन्होंने दो महत्वपूर्ण नाटकों की रचना की।

- a. **मुद्राराक्षस** - इसमें चन्द्रगुप्त मौर्य तथा चाणक्य की कहानी नंदों की समाप्ति तथा मौर्यों की स्थापना को विषय बनाया गया है।
- b. **देवीचन्द्रगुप्तम्** - इसमें गुप्तशासक रामगुप्त तथा शक शासक रुद्रसिंह III रामगुप्त के छोटे भाई चन्द्रगुप्त II उसकी पत्नी शुवदेवी को विषय बनाया गया है।

5. भवभूति (यशोवर्मन)

ये कन्नौज के शासक यशोवर्मन के दरबारी थे।
इन्होंने तीन महत्वपूर्ण नाटकों की रचना की।

- मालतीमाधव** - इसमें मालती एवं माधव नामक पात्र
की विषय बनाया गया है।
- महावीर चरित्र** - भगवान राम के जीवन पर आधारित
नाटक है।
- उत्तररामचरित्र** - यह रामायण के उत्तरकाण्ड पर आधारित
है। भवभूति का यह श्रेष्ठ नाटक है।

6. हर्षवर्द्धन (606 - 647 ई०)

इसने तीन महत्वपूर्ण नाटकों की रचना की।

- रत्नावली** - इसमें श्रीलंका की राजकुमारी रत्नावली
तथा कौशांबी के शासक उद्भव की
प्रेम कथा का वर्णन है।
- नागानंद** - यह बौद्ध विषय पर केचित नाटक है।
- प्रियदर्शिका** - इसमें उदयन तथा महाराजा वृद्धवर्मा की
पुत्री प्रियदर्शिका के प्रेम कहानी का वर्णन
है।

7. राजशेखर

यह गुर्जर प्रतिहार शासक महेंद्रपाल एवं महिपाल के
दरबारी थे। इन्होंने तीन नाटकों की रचना की।

- बालरामायण** - यह 10 अंकों का नाटक है इसमें सीता
के स्वयंवर से भगवान राम के अयोध्या लौटने का
वर्णन है। (संस्कृत)

b. विदूशालभंजिका - यह एक राजकुमार एवं राजकुमारी की प्रेमकथा है। (संस्कृत)

c. कर्पूरमंजरी - यह भी प्रेमकथा है। यह प्राकृत में लिखा गया है।

आधुनिक काल के नाटक / रंगमंच

आधुनिक काल में यूरोपीयों के भारत आगमन के बाद पाश्चात्य नाट्य परम्परा का भारत में आगमन हुआ। फलतः कई रंगमंचों की स्थापना हुई। जैसे-

1. 1465 ई० में एक रूसी नाटककार हेराइसम लैवदेव तथा गोलकनाथ के प्रयास से बंगाल में प्रथम रंगमंच का आयोजन किया गया। इसका विषय था -
"Love is the best doctor"
2. 1852 में मुम्बई में पहली बार फारसी थियेटर की स्थापना हुई।
3. 1943 में "इण्डियन पीपुल थियेटर" बाम्बे की स्थापना हुई।
4. 1953 में कैडिय संगीत नाटक एकेडमी की स्थापना हुई।

वर्तमान भारत में परम्परागत नाटक परम्परा

वर्तमान समय में भारत के विभिन्न हिस्सों में अनेक सामाजिक धार्मिक उत्सवों के अवसरों पर अनेक प्राचीन परम्परागत नाटकों का प्रदर्शन किया जाता है। जिसमें समाज के काफी लोग भाग लेते हैं।

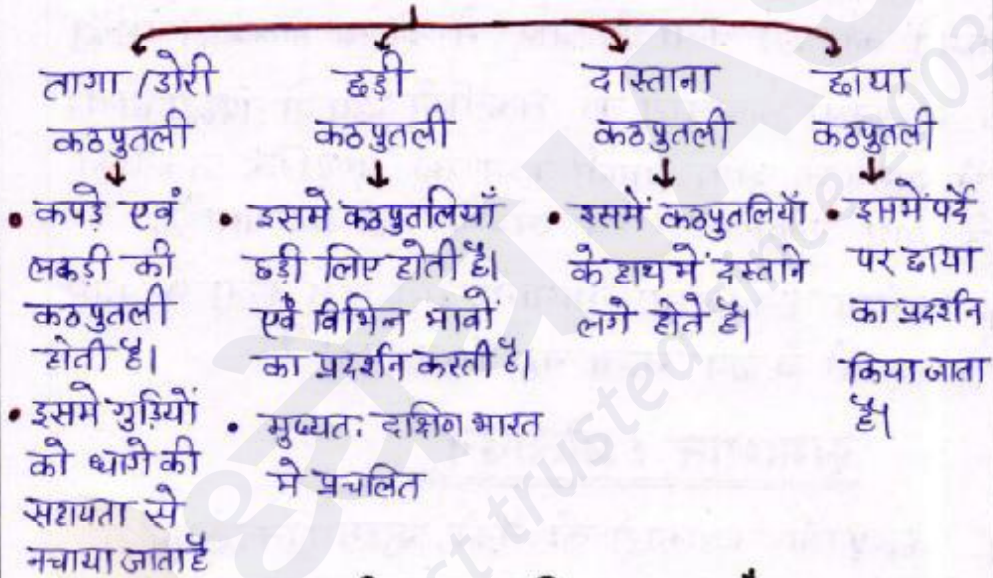
जैसे →

- (1) उत्तर प्रदेश - नौटंकी (इसमें रुमानी विषयों का नाटकीय प्रदर्शन किया जाता है।)
- (2) बिहार - विदेशिया (प्रेम एवं विरह संबंधी भावना का प्रदर्शन)
- (3) बंगाल - जाला (काफी उत्साही नाटक है जिसमें गर्जना के साथ प्रस्तुतीकरण होता है)
- (4) महाराष्ट्र - तमाशा (उत्साही नाटक) ललित एवं भवाङ्ग
↓
दशावतार नृत्य का प्रदर्शन
- (5) हरियाणा - स्वांग
- (6) गुजरात - भंवई
- (7) मध्य प्रदेश - माच
- (8) केरल - a. कट्टियट्टम् (UNESCO के अमूर्त सूची विरासत में सम्मिलित)
b. कूष्कामट्टम्
- (9) यक्षगान - कर्नाटक
↓
इसके तहत रामायण, महाभारत तथा भागवत कथा के प्रसंगों का वर्णन नाटककारी द्वारा अभिनय किया जाता है। इसमें कथाकार मंदिर के चबूतरे पर बैठकर कथा सुनाते हैं तथा पात्र नृत्य करते हैं।

कठपुतली कला

काष्ठ की विभिन्न पुतलियों कठपुतली कहलाती है। यह भारत की अति प्राचीन परम्परागत एवं प्रदर्शनकारी कला है। इसमें गुड़िया या ढवि द्वारा कहानी या नाटक के माध्यम से प्रस्तुतीकरण किया जाता है।

प्रकार



कठपुतली कला की समस्याएँ -

यह भारत की अत्यन्त प्राचीन कला है। वैदिक साहित्य में कठपुतलियों एवं उनके कलाकारों की चर्चा मिलती है। ऐतिहासिक काल में इसके तमाम उदाहरण प्राप्त होते हैं। यह ग्रामीण भारत की महत्वपूर्ण कला रही है। जिसका मनोरंजन के तौर पर इस्तेमाल किया जाता था। वर्तमान में भी बिहार आरखण्ड छत्तीसगढ़ राजस्थान आंध्र प्रदेश आदि राज्यों के ग्रामीण मंचों में इसका प्रदर्शन किया जाता है।

लेकिन हाल ही में इस कला में काफी गिरावट आई है इसके मुख्य समर्थक एवं चुनौतियाँ निम्न हैं।

1. कठपुतली कलाकारों का आर्थिक दृष्टि से कमजोर होना, फलतः वे अपनी कला को बढ़ावा देने के लिए निवेश नहीं कर पाते हैं।
2. कठपुतली कला के प्रति दर्शकों की रुचि का अभाव। वर्तमान में लोग कम्प्यूटर आधारित एनिमेशन, कार्टून Videogame आदि के प्रति अधिक रुचि रखते हैं। नयी पीढ़ियों को इस कला के बारे में विशेष जानकारी नहीं है।
3. कठपुतली कलाकारों का तकनीकी रूप से पिछड़ा होना। वे समय के साथ अपनी कला को आधुनिक तकनीकों के साथ रूपान्तरित एवं संवर्धित नहीं कर पाए हैं।
4. मीडिया एवं संचार माध्यमों द्वारा इस कला के प्रचार प्रसार की केंद्रीय महत्व नहीं दिया जाता है।

समाधान / प्रोत्साहन

1. कठपुतली कलाकारों को बैंकों, सुक्ष्म वित्त संस्थाओं आदि के द्वारा वित्तीय सहायता एवं कम व्याज पर ऋण दिया जाना चाहिए ताकि वे इस कला को आगे बढ़ाने में निवेश कर सकें।
2. आम लोगों में रुचि को बढ़ावा देने के लिए मेलों, प्रदर्शनियों के द्वारा इस कला को बढ़ावा जा सकता है।
3. कठपुतली कलाकारों को कौशल एवं तकनीक का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
4. मीडिया द्वारा इसके प्रचार एवं प्रसार को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

हस्तशिल्प कलायें

1. हाथ से बनी शिल्प / कला जिसका प्रयोग दैनिक उपयोग या सजावट के लिए किया जाये।
2. यह मुख्यतः मानवीय श्रम द्वारा बनाया जाता है मशीनों की भूमिका अत्यन्त कम होती है। (गोड़ होती है।)

प्रकार

मृदभाण्ड, वस्त्र (सूती, रेशमी, उनी) टोकरी, चटाई, कालीन, भाभूषण, हाथी दात पर बनी वस्तुएँ, मूर्तियाँ, कागज के शिल्प

उद्भव एवं विकास

हस्तशिल्प कला भारत की अत्यन्त प्राचीन कला है। हड़प्पा सभ्यता के काल से ही भारत में उच्च कौशल का हस्तशिल्पों का उत्पादन उ किया जाता था। प्राचीन भारत में हस्तशिल्प उत्पादन के अनेक महत्वपूर्ण केंद्र [बनारस तक्षशिला मथुरा उज्जैन कांचीपुरम उरैयूर (T.N.) कश्मीर आदि] थे।

मध्यकाल में दिल्ली के सुल्तानों एवं मुगल शासकों द्वारा भी हस्तशिल्पों को काफी बढ़ावा दिया गया। तुर्कों द्वारा भारत में कई नवीन तकनीकें [चरखा कागज कम्पास रेशमपालन आदि] लायी गयी। इससे हस्तशिल्प उत्पादन में काफी वृद्धि हुई।

आधुनिक काल में भी अंग्रेजी राज स्थापित होने के पूर्व भारतीय हस्तशिल्प काफी समृद्ध थे। अन्तर्गोष्ठीय भारत में लगभग 24-35% के बीच इनकी हिम्मेदारी थी। इससे भारत को काफी लाभ होता था। लेकिन ब्रिटीश राज के स्थापित होने के बाद अंग्रेजों ने अपने फायदे के लिए ऐसी नीतियाँ बनायीं जिससे भारतीय हस्तशिल्पों का लगातार पतन हो गया।

हस्तशिल्पों के प्रकारों का सर्वेक्षण

- A. मिट्टी के शिल्प -
- विविध वर्तन, ईंट, मूर्तियाँ
 - तकनीकी
 - चाक (सामान्य चाक द्वारा निर्मित)
 - विद्युत मोटर चाक
 - हाथ से (काइलिंग तकनीकी)

इसमें मिट्टी के पतले-पतले धागों को जोड़कर निर्मित - भंडारण पात्र बनाना



मृदभाण्ड दो प्रकार

चमकहीन मृदभाण्ड
(Unglazed pottery)

यह भारत की सबसे प्राचीन मृदभाण्ड परम्परा है। वर्तमान में भी देश के अधिकांश हिस्से में यही बनाया जाता है।

चमकवाले मृदभाण्ड
(Glazed pottery)

यह भारत में बाहर से आया मृदभाण्ड है प्राचीन काल में चीन से आया था। मध्यकाल में अरब मध्य एशिया के कलाकारों द्वारा भारत लाया गया। वर्तमान में देश में इसका निर्माण कम होता है।

प्राचीन भारत के महत्वपूर्ण चमकहीन मृदभाण्ड

प्राचीन भारत में मुख्यतः चमकहीन मृदभाण्डों का निर्माण किया जाता था जो नवपाषाण काल से ही निरन्तर आगे बनाये जाते रहे। वर्तमान में भी यह परम्परा जारी है।

महत्वपूर्ण मृदभाण्ड परम्पराएँ

1. काला एवं लाल मृदभाण्ड :- इसके तहत लाल मृदभाण्ड पर काला चित्रण किया जाता था यह अच्छी तरह भाग में पक़ाया हुआ मृदभाण्ड होता था इडप्पा सम्प्रदाय तथा ऐतिहासिक काल में इसके निर्माण के साक्ष्य मिलते हैं।
2. गेरुआ रंगीन मृदभाण्ड :- यह काफी महीन मृदभाण्ड था जो गेरुआ रंग का होता था इसे ऋग्वेदिक लोगो से संबंधित माना जाता है यह काफी कमजोर मृदभाण्ड है।
3. चित्रित घूसर मृदभाण्ड :- घूसर मृदभाण्ड पर चित्रण यह उत्तर वैदिक काल से संबंधित है इसके साथ-साथ लोहे की भी वस्तुएँ मिली हैं उत्तर वैदिक लोगो द्वारा निर्मित यह वैदिक मृदभाण्ड माना जाता है।
4. उत्तरी कालीन चमकीली मृदभाण्ड :- North Blackes painted ware यह प्राचीन भारत का सबसे वैदिक मृदभाण्ड है बुद्ध काल से लेकर मौर्य काल तक इसका निर्माण किया जाता था। इसका प्रयोग समृद्ध लोग करते थे।
5. लाल मृदभाण्ड :- इसके तहत मृदभाण्ड निर्माण के बाद लाल से अच्छी पॉलिश की जाती थी मौर्योत्तर काल से लेकर भागी के काल खण्डों तक यह जारी रहा।

वर्तमान में चमकीली मृदभाण्डों के प्रकार/रूप

वर्तमान में देश भर में मुख्यतः तीन प्रकार के चमकीली मृदभाण्डों का निर्माण किया जाता है।

1. कागज जैसा पतला मृदभाण्ड :- यह भारत का अत्यन्त महत्वपूर्ण मृदभाण्ड है जो काफी पतला होता है। देश भर में कुम्भकारों द्वारा इसका बड़े पैमाने पर निर्माण किया जाता है भ्राम उपयोग में आने वाला गिलास कटोरे घालियां हांडी आदि इसके तहत बनाए जाते हैं।

2. अलंकृत मृदभाण्ड (scrabbed pottery) यह मृदभाण्ड पैपर पॉटरी जैसा सादा नहीं बल्कि निर्माण के बाद फूल, पत्ती डिजाइन आदि द्वारा इसे अलंकृत किया जाता है राजस्थान जम्मू & कश्मीर आदि में इसका मुख्य उत्पादन होता है।

3. चमकीला मृदभाण्ड (polished ware) भाग में अच्छी तरह से पकाने के बाद मृदभाण्डों पर अधिक चमक देने के लिए पॉलिस किया जाता है। देश के मुख्य शहरो - दिल्ली मुंबई चंडीगढ़ में कुहार इसे चमकीला बनाने का प्रयास करते हैं।

8. वस्त्र उद्योग

भारत का अतिप्राचीन हस्तशिल्प (नवपाषाण, हड़प्पा)

रेशमी वस्त्र :- प्राचीन भारत में रेशम का पालन नहीं होता था कच्चा रेशम चीन से आता था। लेकिन भारतीय बहुत उम्दा वस्त्र बनाते हैं। रेशम पालन का ज्ञान मध्य काल में तुर्कों द्वारा लाया गया।

- ककून के किशो (बाढ़वत के पेड़ पर) से उत्पादन होता है।
- वर्तमान में भारत एक मात्र देश है जहाँ चारों प्रकार के रेशम का उत्पादन होता है। यथा -

1. मलवरी रेशम
2. तसर रेशम
3. मूंगा रेशम
4. सरी रेशम

रेशम की प्रसिद्ध साड़ियाँ

- जरी - बनारस की रेशमी साड़ी
- पटौला - गुजरात की रेशमी साड़ी
- कांजीवरम् - तमिलनाडू
- कसावु - केरल (भरतनाट्यम्)

सूती वस्त्र

1. विश्व में कपास का उत्पादन सर्वप्रथम भारत में मेहरारू में नवपाषाण काल में।

2. प्राचीन भारत में सूती वस्त्र कई प्रकार के बनाये जाते थे।

1. मोटा कपड़ा - पट (अवय क्षेत्र)

2. महीन सूती कपड़ा - छींट मलमल (ढाका) कपोस



मुगलकाल में नाम - शबनम, वफ्त, आवेखा

वर्तमान में महत्वपूर्ण प्रकार

1. फूलकारी (पंजाब) - खादी के सूती कपड़े पर फूलों का कार्य (प्रयोग) किया जाता है।

2. चिकनकारी (लखनऊ) - महीन सूती कपड़ा (मलमल) पर कढ़ाई (यह नरजहों की खोज है लखनऊ के नवाबों ने इसे विशेष बढ़ावा दिया।

3. कच्चा (बंगाल) - महीन सूती कपड़े पर कढ़ाई

4. कलमकारी (द. भारत) - विशेषतः आन्ध्र प्रदेश, सूती कपड़े पर रामायण एवं महाभारत के विषयों का चित्रण

सूती कपड़े पर कढ़ाई

हाथ से कढ़ाई

ब्लॉक पेइंग (Block painting)

लकड़ी के ब्लॉक (सांचा) से

डिजाइन बनाना।

C. आभूषण (Ornaments)

↳ हाथ, पैर, गला, कमर, नाक

मीनाकारी - उच्च कोटि का आभूषण है। इसके तहत सोने-चांदी के आभूषणों पर बहुमूल्य कीमती पत्थर जड़े होते हैं। तथा फूल-पत्ती, पशु-पक्षी आदि के डिजाइन कए होते हैं।

D. पत्थर के हस्तशिल्प

भारत में आते प्राचीन काल से ही पत्थर के हस्तशिल्प बनाए जाते रहे हैं। इसमें वर्तन, मूर्ति, खिलौना, मनका आदि।

प्राचीन भारत में कुछ विशेष स्थान पत्थर के हस्तशिल्प निर्माण के लिए अत्यन्त प्रसिद्ध थे। जैसे -

1. **महाबलीपुरम् (पल्लव) एवं तंजीर (चोल)** - ग्रेनाइट पत्थर द्वारा यहां विभिन्न प्रकार की मूर्तियां बनाई जाती थीं। जिन्हें आज भी दक्षिण भारत के मंदिरों में देखा जाता है।
2. **मधुरा, चुनार, खजुराहो** - बलुआ पत्थर द्वारा इन सभी स्थानों पर अनेक शिल्प बनाए जाते थे।

मधुरा - लाल बलुआ पत्थर	}	प्रयोग किया जाता था।
चुनार - चित्तीदार बलुआ पत्थर		
खजुराहो - गुलाबी बलुआ पत्थर		
3. **दिल्ली सल्तनत की इमारतें** - सभी बलुआ पत्थर के प्रयोग से बनी हैं।
4. **मुगलकालीन इमारतें** - लाल बलुआ + संगमरमर

E. धातु के शिल्प

- ↳ सोना, चांदी, अष्टधातु, तांबा, कांसा, पीतल
- ↳ ढलाई करके शिल्प का निर्माण मुख्यतः दो प्रकार से
 1. द्रवीभौम विधि - मोहनजोदड़ो की नर्तकी, नटराज शिव (चोल)
 2. कोफ्तकारी तकनीकी - तलवार निर्माण में प्रयोग सजावट

F कागज के हस्तशिल्प

- ↳ कागज का आविष्कार china (चीन)
- ↳ प्राचीन भारत में कागज का प्रयोग नहीं होता था। (ताड़पत्र भुजपत्र का प्रयोग)
- ↳ कागज भारत में तुर्की द्वारा लाया गया था इसकी सबसे प्राचीन पाण्डुलिपी गुजरात के जैन मठों से मिली है।
- ↳ कागज की कला (जिल्दसाली) कश्मीर की विशेष कला है जिसे कार-ए-कलमदान कहा जाता है।
- ↳ मध्यकाल में कश्मीर के शासक जैनुल आब्दीन ने जिल्दसाली कला को काफी बढ़ावा दिया। उसने दो लोगों को जिल्दसाली सीखने के लिए समरकंद (मध्य एशिया) भेजा था।
- ↳ मथुरा क्षेत्र में कागज का सांझी हस्तशिल्प काफी लोकप्रिय है इसके तहत पेपर को कारकर मोर, बत्तख आदि की उत्कृष्ट डिजाइन बनायी जाती है।

वर्तमान में हस्तशिल्पों के समक्ष समस्याएँ

भारत हजारों वर्षों से उत्कृष्ट हस्तशिल्पों का उत्पादन करने वाला महत्वपूर्ण देश रहा है लेकिन वर्तमान में हस्तशिल्पों के समक्ष अनेक चुनौतियाँ हैं। —

1. हस्तशिल्पीयों के पास वित्तीय स्रोतों एवं संसाधनों की कमी अत्यन्त गरीबी के कारण यह वित्त नहीं जुटा पाते। बैंकिंग वित्तीय संस्थानों द्वारा कर्ण नहीं दिए जाने की समस्याएँ
2. तकनीकी पिछड़ापन एवं कौशल की कमी
3. हस्तशिल्प का तुलनात्मक रूप से महंगा होना, इससे बड़ी संख्या में खरीदारी नहीं कर पाते हैं।
4. मीडिया एवं प्रचार प्रसार माध्यमों द्वारा इन्हें कम बढ़ावा दिया जाता है।

बढ़ावा देने / प्रोत्साहित करने के सुझाव

1. हस्तशिल्पीयों कोटे कामगारों आदि को वित्तीय समर्थन दिया जाना चाहिए। बैंकों वित्तीय संस्थानों, खुदम वित्त द्वारा इन्हें वित्तीय सहायता दी जानी चाहिए।
2. हस्तशिल्पीयों को कौशल एवं तकनीकी से जोड़ा जाना चाहिए इन्हें आधुनिक तकनीकी से युक्त बनाया जाना चाहिए ताकि वे वैश्विक प्रतिस्पर्धा का सामना कर सकें।
3. मेलों एवं प्रदर्शनियों के माध्यम से इनमें लोगों की रुचि बढ़ानी चाहिए।
4. मीडिया एवं प्रचार माध्यमों के द्वारा बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
5. वर्तमान सरकार को हस्तशिल्पों को बढ़ावा देने की योजना जैसे उस्ताद योजना एवं अन्य योजनाएँ।

Dhyeya IAS Now on Telegram

We're Now on Telegram



Join Dhyeya IAS Telegram

Channel from the link given below

"https://t.me/dhyeya_ias_study_material"

You can also join Telegram Channel through
Search on Telegram

"Dhyeya IAS Study Material"

Join Dhyeya IAS Telegram Channel from link the given below

https://t.me/dhyeya_ias_study_material

नोट : पहले अपने फ़ोन में टेलीग्राम App Play Store से Install कर ले उसके बाद लिंक में क्लिक करें जिससे सीधे आप हमारे चैनल में पहुँच जायेंगे।

You can also join Telegram Channel through our website

www.dhyeyaias.com

www.dhyeyaias.in



Address: 635, Ground Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi 110009
Phone No: 011-47354625/ 26 , 9205274741/42, 011-49274400

Subscribe Dhyeya IAS Email Newsletter

(ध्येय IAS ई-मेल न्यूजलेटर सब्सक्राइब करें)

जो विद्यार्थी ध्येय IAS के व्हाट्सएप ग्रुप (Whatsapp Group) से जुड़े हुये हैं और उनको दैनिक अध्ययन सामग्री प्राप्त होने में समस्या हो रही है | तो आप हमारे ईमेल लिंक Subscribe कर ले इससे आपको प्रतिदिन अध्ययन सामग्री का लिंक मेल में प्राप्त होता रहेगा | **ईमेल से Subscribe करने के बाद मेल में प्राप्त लिंक को क्लिक करके पुष्टि (Verify) जरूर करें** अन्यथा आपको प्रतिदिन मेल में अध्ययन सामग्री प्राप्त नहीं होगी |

नोट (Note): अगर आपको हिंदी और अंग्रेजी दोनों माध्यम में अध्ययन सामग्री प्राप्त करनी है, तो आपको दोनों में अपनी ईमेल से **Subscribe** करना पड़ेगा | आप दोनों माध्यम के लिए एक ही ईमेल से जुड़ सकते हैं |

Join Dhyeya IAS Whatsapp Group by Sending "Hi Dhyeya IAS" Message on 9205336039.

Subscribe Dhyeya IAS Email Newsletter

Step by Step guidance for Subscription:

- **1st Step:** Fill Your Email address in form below. you will get a confirmation email within 2 min.
- **2nd Step:** Verify your email by clicking on the link in the email. (Check Inbox and Spam folders)
- **3rd Step:** Done! you will receive alerts & Daily Free Study Material regularly on your email.

Subscribe

ध्येय IAS अब व्हाट्सएप पर Dhyeya IAS Now on Whatsapp

ध्येय IAS अब व्हाट्सएप पर
मुफ्त अध्ययन सामग्री उपलब्ध है

ध्येय IAS के व्हाट्सएप ग्रुप से जुड़ने
के लिए 9355174442 पर **"Hi Dhyeya IAS"**
लिख कर मैसेज करें

आप हमारी वेबसाइट के माध्यम से भी जुड़ सकते हैं
www.dhyeyaias.com
www.dhyeyaias.in



ध्येय IAS के व्हाट्सएप ग्रुप से जुड़ने के लिए **9355174442** पर **"Hi Dhyeya IAS"** लिख कर मैसेज करें

नोट: अगर आपने हमारा Whatsapp नंबर अपने Contact List में Save नहीं किया तो आपको प्रीतिदिन के मैटेरियल की लिंक प्राप्त नहीं होंगी इसलिए नंबर को Save जरूर करें।

आप हमारी वेबसाइट के माध्यम से भी जुड़ सकते हैं

www.dhyeyaias.com
www.dhyeyaias.in



Address: 635, Ground Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi 110009
Phone No: 011-47354625/ 26 , 9205274741/42, 011-49274400